# वो जंगली कुत्ते कौन हैं जिनसे हिंदू शेर को ख़तरा है?

**राजेश प्रियदर्शी**

**ग्यारह सितंबर 1893 को शिकागो में हुए विश्व धर्म संसद में विवेकानंद के भाषण की याद में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने भी शिकागो में ही आठ सितंबर को एक भाषण दिया है.**

11 सितंबर की जगह आठ सितंबर क्योंकि सप्ताहांत न हो तो काम छोड़कर अमरीका में भाषण सुनने लोग नहीं आते, और विश्व धर्म संसद की जगह विश्व हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया गया. आप मोहन भागवत के अंग्रेज़ी में दिए गए 41 मिनट का भाषण सुनेंगे तो आपको समझ में आएगा कि उन्होंने विवेकानंद से कोई प्रेरणा नहीं ली है.

पूरे भाषण के दौरान अमरीकी झंडा बैकग्राउंड में था, वहां न तो कोई भगवा ध्वज था, न ही तिरंगा.

बहरहाल, उन्होंने कई बातें कहीं जिन पर ग़ौर किया जाना चाहिए क्योंकि वो मामूली व्यक्ति नहीं हैं, संसार के सबसे बड़े एनजीओ के प्रमुख हैं जिसे भारत की मौजूदा सरकार अपनी प्रगति रिपोर्ट पेश करती है क्योंकि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भाजपा की 'मातृसंस्था' है.

'भारत ज्ञानी रहा है फिर क्यों आई मुसीबतें'

मोहन भागवत ने कहा कि भारत में हमेशा से समस्त संसार का ज्ञान रहा है, भारत के आम लोग भी इन बातों को समझते हैं. इसके बाद उन्होंने एक दिलचस्प सवाल पूछा, "फिर क्या ग़लत हो गया, हम हज़ार साल से मुसीबत क्यों झेल रहे हैं?" इसका जवाब उन्होंने दिया कि ऐसा इसलिए हुआ कि "हमने अपने आध्यात्मिक ज्ञान के मुताबिक जीना छोड़ दिया."

**ग़ौर करिए कि उन्होंने हज़ार साल की मुसीबत क्यों कहा? संघ का मानना है कि भारत के दुर्दिन अंग्रेज़ी राज से नहीं बल्कि मुसलमानों के हमलों से शुरू हुए, मुग़ल काल को भी वे मुसीबत का दौर मानते हैं.**

दरअसल, ऐसे मौक़े याद नहीं आते जब संघ ने अंग्रेज़ी हुकूमत की आलोचना की हो, न अतीत में, न वर्तमान में. आलोचना के मामले में मुग़ल उनके प्रिय रहे हैं.

इसके बाद उन्होंने एक और दिलचस्प बात कही, "आज की तारीख़ में हिंदू समाज दुनिया का ऐसा समाज है जिसमें हर क्षेत्र के मेधावी लोग सबसे अधिक संख्या में मौजूद हैं." न जाने उन्होंने यह निष्कर्ष किस आधार पर निकाला कि हिंदू, अपने हिंदू होने की वजह से यहूदियों, ईसाइयों या मुसलमानों से अधिक प्रतिभाशाली हैं?

यह हिंदू गौरव को जगाने की उनकी कोशिश थी, इसके फ़ौरन बाद उन्होंने कहा कि हिंदू एकजुट होकर काम नहीं करते, यही उनकी सबसे बड़ी समस्या है. उन्होंने एक किस्सा सुनाया कि एकजुट होने के आह्वान पर हिंदू कहते रहे हैं कि "शेर कभी झुंड में नहीं चलते."

उन्होंने कहा, "जंगल का राजा, रॉयल बंगाल टाइगर भी अगर अकेला हो तो जंगली कुत्ते उसे घेरकर, हमला करके मार दे सकते हैं." उनके ऐसा कहते ही हॉल तालियों से गूंज उठा, उन्हें कहने-बताने की ज़रूरत नहीं पड़ी कि वे जंगली कुत्ते किसको कह रहे हैं. ये वही कुत्ते हैं जिनके पिल्ले गाड़ी के नीचे आ जाएं तो प्रधानमंत्री मोदी जी को दुख होता है.

"हिंदू होने पर गर्व करना चाहिए", "हिंदू ख़तरे में हैं" और "हिंदुओं को एकजुट होना चाहिए"... ये सब संघ का स्थायी भाव है. हिंदुओं को किससे ख़तरा है? हिंदुओं को किस लक्ष्य के लिए एकजुट होना चाहिए, किसके खिलाफ एकजुट होना चाहिए, इन सवालों के जवाब इशारों में समझाए जाते हैं, चुनाव जैसी विकट स्थितियों में ही मंच से क़ब्रिस्तान-श्मशान कहना पड़ता है. सरकार आपकी, शेर हैं आप, पुलिस और प्रशासन भी आपका है, डर भी आप ही को लग रहा है. आमिर ख़ान की बीवी किरण राव को डर लगता है वो ग़लत है, आपका वाला डर सच्चा है. क्या ग़ज़ब का डर है.

मोहन भागवत ने कहा कि सभी हिंदू दुनिया को बेहतर बनाना चाहते हैं, वे ईमानदारी से ऐसा करना चाहते हैं. उन्होंने कहा, "हमारा उद्देश्य किसी पर वर्चस्व कायम करना नहीं रहा है, इतिहास में हमारा प्रभाव बहुत रहा है और मेक्सिको से साइबेरिया तक, वहां पर हिंदू साम्राज्य थे, आज भी उन प्रभावों को देखा जा सकता है, और कमाल की बात है कि वहां के लोग इन प्रभावों को संजोकर रखते हैं."

उन्होंने इनके नाम तो नहीं लिए लेकिन माया, इन्का, यूनान और मिस्र जैसी प्राचीन सभ्यताओं के सभी प्रकृतिपूजकों और मूर्तिपूजकों को एक झटके में हिंदू घोषित कर दिया, उन्हें हिंदू साम्राज्य बताकर, वो भारत को गौरवशाली हिंदू राष्ट्र बनाने के लिए जोश का वातावरण तैयार करना चाहते हैं.

अपने भाषण में भागवत ने महाभारत का जिक्र छेड़ा, उन्होंने कहा कि "आज के आधुनिक समय में हिंदुओं की अवस्था वही है जो महाभारत में पांडवों की थी."

**इस छोटे से वाक्य में गहरे अर्थ छिपे हैं, ये कि हिंदू पीड़ित हैं, अन्याय के शिकार हैं और उन्हें अपने अधिकार हासिल करने के लिए धर्मयुद्ध लड़ना होगा. इसके बाद वो हनुमान की कथा सुनाने लगे कि कैसे उन्होंने दृढ़ संकल्प से समुद्र पार कर लिया.**

उन्होंने कहा, 'हिंदुओं के सारे काम सबके कल्याण के लिए होते हैं, हिंदू कभी किसी का विरोध करने के लिए नहीं जीते. दुनिया भर में कीटनाशक इस्तेमाल होते हैं, लेकिन हिंदू वह समाज है जिसने कीट-पतंगों के जीवित रहने के अधिकार को स्वीकार किया.' उन्होंने बताया कि हिंदू कितने सहिष्णु हैं, लेकिन मौजूदा हालात में कीड़े-मकौड़े किनको कहा जा रहा है, ये उन्होंने लोगों की कल्पना पर छोड़ दिया.

भागवत ने कहा कि 'हम किसी का विरोध नहीं करते, लेकिन ऐसे लोग हैं जो हमारा विरोध करते हैं, ऐसे लोगों से निबटना होगा, और उसके लिए हमें हर साधन, हर उपकरण चाहिए ताकि हम अपनी रक्षा कर सकें कि वे हमें नुकसान न पहुंचा सकें.' वे लोग कौन हैं फिर नहीं बताया गया, सब जानते तो हैं ही.

### लक्ष्य, दिशा और कार्यशैली

मोहन भागवत ने एक बेहद ज़रूरी बात बताई जिससे संघ की कार्यशैली का अंदाज़ा मिलता है. उन्होंने विस्तार से समझाया किस तरह लोगों को एक-दूसरे का साथ देना चाहिए, न कि एक-दूसरे का विरोध करना चाहिए. उन्होंने कहा कि सबको अपने-अपने तरीक़े से लक्ष्य को ध्यान में रखकर, अपने आगे चल रहे लोगों से कदम मिलाकर चलना चाहिए.

उन्होंने अँग्रेज़ी का मुहावरा इस्तेमाल किया, लर्न टू वर्क टूगेदर सेपरेटली यानी साथ मिलकर अलग-अलग काम करना सीखें. यही संघ के काम करने का तरीका है, वह सैकड़ों छोटे संगठनों के ज़रिए काम करता है, सब अलग-अलग काम करते हैं और सब एक ही लक्ष्य के लिए काम करते हैं, वक्त-ज़रूरत के हिसाब रास्ते चुनते हैं, लेकिन उनके किसी भी काम की कोई जिम्मेदारी संघ की नहीं होती.

एक-दूसरे से दूरी रखते हुए, निकटता बनाए रखना और एक तरह से अदृश्य शक्ति में बदल जाना यही संघ का मायावी रूप रहा है. मिसाल के तौर पर अगर किसी अवैध या हिंसक गतिविधि में बजरंग दल या विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ता पकड़े जाते हैं, ऐसा अनेक बार हो चुका है, तो कोई ये नहीं कह पाता कि संघ का इसमें कोई हाथ है क्योंकि यहीं 'वर्किंग टूगेदर सेपरेटली' काम आता है, जिसका ज्ञान शिकागो में मिला.

भागवत ने कहा कि महाभारत में कृष्ण युधिष्ठिर को कभी रोकते-टोकते नहीं हैं, युधिष्ठिर जो हमेशा सच बोलने की वजह से धर्मराज कहे जाते हैं, 'कृष्ण के कहने पर वही युधिष्ठिर लड़ाई के मैदान में ऐसा कुछ कहते हैं जो सच नहीं है'. उन्होंने ज़्यादा विवरण नहीं दिया, उनका इशारा युधिष्ठिर के उस अर्धसत्य की तरफ़ था जब उन्होंने कहा था-अश्वत्थामा मारा गया.

**भागवत का इशारा यही था कि परम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए नेतृत्व अगर झूठ बोले या बोलने को कहे तो इसमें कोई बुराई नहीं है, मतलब साफ़ था कि कोई धर्मराज से बड़ा सत्यवादी बनने की कोशिश न करे. उन्होंने कहा कि सबको अपनी भूमिका अदा करनी चाहिए, रामलीला की तरह जिसमें कोई राम बनता है, कोई रावण, लेकिन सबको असल में याद रखना चाहिए वे कौन हैं और उनका लक्ष्य क्या है.**

अब उन्हें यह बताने की ज़रूरत क्यों पड़ने लगी कि वह लक्ष्य क्या है? वह लक्ष्य हिंदू राष्ट्र की स्थापना है.

अपने 41 मिनट लंबे भाषण में उन्होंने विवेकानंद का नाम सिर्फ़ एक बार यह साबित करने के लिए लिया कि वे जो कह रहे हैं वह सही है. वैसे भी संघ के लोग कभी नहीं बताते विवेकानंद, भगत सिंह, सरदार पटेल या महात्मा गांधी या किसी दूसरी अमर विभूति ने दरअसल कहा क्या था क्योंकि उसमें बड़े ख़तरे हैं.

## गिरफ्तार एक्टिविस्ट गौतम नवलखा को पीयूडीआर की मेघा का खुला खत

**घर में नजरबंद हो, इसलिए तुम्हारे नाम एक खुला खत लिख रही हूं। वैसे इस दौर में खत लिखने का एक नुकसान है कि कहीं अब यह भी सत्ताधारियों के नुमाइंदों द्वारा निरंतर निर्मित खतों की पटकथा में शामिल न कर लिया जाए, तुम और मैं किसी प्रतिबंधित पार्टी के षड्यंत्रकारी सदस्य न बना दिये जाएं। खैर!**

**गोरख पांडेय की वह कविता जो तुमने हमारी आखिरी बातचीत में मुझे सुनाई थी अब तक जहन में घूम रही है - उनका डर।**

**वे डरते हैं**
**किस चीज से डरते हैं वे**
**कि तमाम धन-दौलत**
**गोला-बारूद पुलिस-फौज के बावजूद?**
**वे डरते हैं**
**कि एक दिन**
**निहत्थे और गरीब लोग**
**उनसे डरना**
**बंद कर देंगे**

**तुम्हारी गिरफ्तारी के बाद से सोच रही हूं कि आखिर किस बात का डर सता रहा होगा आज के सत्तधारियों को जो तुम जैसे नरमदिल गुस्सैल को कैद करके सुकून पा रहे हैं? पूरी तरह से सार्वजनिक होने के बावजूद, पीयूडीआर की गतिविधियों की निगरानी तो ये करते ही आये हैं, लेकिन अब की इन्होंने ऐसा क्या देख लिया तुममें, तुम्हारी किस बात से भयभीत हैं?**

**लोकगीत जो तुम गाते हो पीयूडीआर के कार्यक्रमों में वे तो कारण नहीं ? लगता है वे तुम्हारी बुलंद आवाज से सच में डर बैठे हैं! आदिवासियों पर हो रहे दमन के खिलाफ, मजदूरों के हितों के लिए, गटरों में रोज-रोज मर रहे दलितों के लिए, मुसलमानों की हो रही हत्याओं के खिलाफ तुमने जो भी भाषण दिए, उनकी वीडियो ये सभी देख चुके हैं, तुमने जिन रिपोर्टों पर काम किया वे सभी पढ़ चुके हैं ।**

**तुम्हारे जनवादी अधिकारों पर व्यापक समझ से भयभीत हैं क्या ये? पर वह समझ तो चालीस वर्षों से लोगों के बीच लिख-बोलकर तुम साझा करते ही आये हो। क्या इन्हें यह लग रहा है कि तुम्हें कैद करने से तुम्हारे विचारों और तुम्हारे द्वारा विगत में किये गए काम को भी कैद कर पाएंगे?**

**एक 65 वर्षीय की स्फूर्ति से डर रहे हैं? शायद ये जान चुके हैं की आज भी अगर हमारे संगठन में कोई बेहद सक्रिय है तो वह तुम हो। जरूर ये उस दिन भी तुम पर नजर रखे हुए थे जब तुम और हम कापसहेड़ा बॉर्डर पर सुबह-सुबह कपड़ा फैक्ट्री के मजदूरों के बीच फैक्ट्री परिसर में हो रही दुर्घटनाओं को लेकर पर्चा वितरण करने गए थे ।**

**इस तानाशाह सरकार को जरूर यह भी गम बैठ गया है कि कैसे कोई व्यक्ति इतने वर्षों से जनवादी तौर-तरीकों से कार्यरत है। शायद इन्होंने जनवादी अधिकारों के मुद्दों पर हो रही पीयूडीआर की चर्चाओं की निगरानी में यह गौर किया होगा की तुमसे आधी उम्र के सदस्य किस प्रकार तुमसे बहस करते हैं, तुम पर चिल्लाते हैं, असहमति व्यक्त करते हैं और फिर तुमसे गले मिलकर जाते हैं।**

**बेशक वे तुम्हारी गति से तो डर रहे हैं कि कहीं 2019 चुनावों से पहले हमारा काम इनकी पोलों का पुलिंदा न खोल दे। और इनके द्वारा निरंतर देश के अलग-अलग हिस्सों में किये जा रहे मानवाधिकारों के हनन का चिट्ठा न खुल जाए? आखिर क्यों तुम यूएपीए जैसे गैर-लोकतांत्रिक कानूनों के दुष्प्रभावों पर इतने आंकडें इकट्ठा करने में जुटे थे? लगा दिया न तुम पर भी यूएपीए ! राजनैतिक बंदियों के लिए मांगे रखते-रखते, लो आज बन गए तुम भी एक राजनैतिक बंदी!**

**अब की बार अपने डरों को इन्होंने अर्बन नक्सल का नाम दिया है। राजनैतिक और जनवादी मुद्दों को लेकर कितना संकीर्ण दृष्टिकोण है यह! गोरख पांडेय ने कितना सटीक लिखा था। जब तक ये इन्हीं के द्वारा रचे इस खेल से थक हार कर निकलेंगे तब तक कितनी और नजरें इन्हें घूरती होंगी शायद इसका अंदाजा नहीं है अभी इन्हें।**

**खैर, तुम अपना ख्याल रखना। तुमसे और तुम्हारे काम से इस देश के जनवादी अधिकार आंदोलन के इतिहास और आज के बारे में जो भी समझा है वह हमेशा साथ रहेगा। तुम्हारी रिहाई के इंतजार में।**

## वे हमारे सोचने-समझने की शक्ति पर कब्जा करना चाहते हैं...बल्कि कब्जा करते जा रहे हैं

हमारे लिये, हमारे समाज के लिये, हमारे देश के लिये क्या सही है, यह वे तय करना चाहते हैं, बल्कि तय करने लगे हैं।

वे हमारी 'मेन्टल कंडीशनिंग' इस तरह कर रहे हैं ताकि हम उनके उद्देश्यों में अवरोध न बनें। हम खुद की पहचान भूल कर उनके बनाए परशेप्शन पर चलें। वे चाहते हैं कि हम विचार नहीं करें बल्कि उन निष्कर्षों को ही मान कर चलें जो वे हमारी सोच में 'इंजेक्ट' करते हैं।

इसके लिये वे बहुत कुछ करते हैं। वे सूचना के स्रोतों पर कब्जा करते जा रहे हैं, वैचारिक केंद्रों पर आधिपत्य जमाते जा रहे हैं। उन्होंने सत्ता की धुरी को अपनी जद में ले लिया है और नीतियों पर उनका अप्रत्यक्ष आधिपत्य पूरी व्यवस्था को उनकी अनुगामिनी के रूप में तब्दील करता जा रहा है।

उन्होंने सस्ते डाटा की नदियां बहा दी हैं। पूरी युवा पीढ़ी इनमें गोते लगा रही है। इसके लिये उन्होंने अकूत निवेश किया है। ऐसा 'प्राइस वार' छिड़ा कि तमाम छोटे खिलाड़ी मैदान से बाहर हो गए और महज दो-चार कंपनियां बाजार में रह गईं।

नहीं, अभी वे डाटा बाजार में मुनाफा की नहीं सोच रहे। उसी तरह, जैसे एक-एक कर न्यूज चैनलों पर कब्जा करते वक्त उनके ज़ेहन में मुनाफा कतई नहीं था। उनका खेल बड़ा है, उनके उद्देश्य बड़े हैं। डाटा, चैनल आदि तो उनके उपकरण हैं...हमें अपने अनुकूल बनाने के लिये, अपने अनुकूल बनाए रखने के लिये।

मीडिया उनका, मीडिया वाले उनके। सत्ता उनकी, सत्ता में बैठी कठपुतलियां उनकी। विचार उनके, विचार केंद्र उनके, विचारक उनके।

प्रतिरोध के तमाम विचारों को अप्रासंगिक ठहराने की उनकी क्षमताएं बढ़ती जा रही हैं।

उनके लिये भारत महत्वपूर्ण है। समूचे यूरोप से भी बड़ा बाजार। अकूत प्राकृतिक संसाधन, अपार मानव संसाधन। सस्ता 'वर्क फोर्स'...जिनमें अपने अधिकारों के प्रति समझ घटती जा रही है, जिनमें संघर्ष का माद्दा छीजता जा रहा है। सदियों से शोषित विशाल वंचित समुदाय उनकी शर्तों पर उठक-बैठक करता रहे, इसके लिये वे तमाम साजिशें करते हैं। उन्होंने राजनीति के उत्स पर ही कब्जा जमा लिया है। क्या राष्ट्रवादी, क्या समाजवादी, क्या बहुजनवादी....सारे जाति और धर्म की विभाजक रेखाओं के पहरेदारों में तब्दील किये जा चुके हैं।

असमंजस में पड़ा ऐसा समाज... जो मुक्तिकामी तो है, लेकिन मुक्ति के रास्तों की तलाश का माद्दा खोता जा रहा है। अंधेरे में डूबती सभ्यता...जहां मनुष्य को उसकी उपभोग शक्ति के पैमाने से परिभाषित किया जा रहा है और चूंकि 70 प्रतिशत लोग उपभोग की क्षमता नहीं रखते, इसलिये मनुष्य होने का अधिकार खोते जा रहे हैं।

उन्हें भारत की बौद्धिकता से खतरा है। इसलिये, वे हमारी बौद्धिकता पर भी कब्जा करना चाहते हैं। वे एक-एक कर हमारी बौद्धिकता के केंद्रों पर कब्जा करते जा रहे हैं, समानांतर केंद्रों की स्थापना करते जा रहे हैं। वे पाठ्य-क्रम तय करेंगे, चिंतन की दिशा निर्धारित करेंगे।

वे हमारी अकादमिक संरचना में धीरे-धीरे इतने शक्तिशाली होते जा रहे है कि वे तय करेंगे कि हम इतिहास को किस नजरिये से देखें, कि अपने साहित्य के प्रति हमारा कैसा दृष्टिकोण हो, कि विभिन्न क्षेत्रों में शोधों की दिशा क्या हो।

उन्हें सबसे अधिक डर है हमारे जागरूक होने से, हमारी चेतना के उर्ध्वगामी होने से। तभी तो...वे हर मोर्चे पर हमको घेर रहे हैं ताकि हम सचेतन न हो सकें। फ्री डाटा की सौगात, मीडिया की मुख्य धारा पर कब्जा करने के साथ ही उन्होंने फिल्म कंपनियां तक बना ली हैं और ऐसी फिल्मों के निर्माण में पैसा झोंक रहे हैं जो एक व्यक्ति या एक समाज के रूप में हमारे उन्नयन में कहीं से प्रेरक या सहयोगी नहीं। वे सिर्फ हमें मनोरंजन की अंधी गलियों में भटकाती हैं। तभी, अब न कोई शांताराम है, न विमल राय, न राज कपूर। प्रतिगामी मूल्यों को स्थापित करते हमारे निर्देशक, सब्जी मसाले बेचते हमारे महानायक।

उन्होंने एक बौद्धिक समाज में 'बुद्धिजीवी' शब्द को लोकप्रिय अर्थों में बहुत हद तक हास्यास्पद और अप्रासंगिक जीव के रूप में स्थापित करने में सफलता पा ली है। इतनी...कि जाल में फंसती सभ्यता को सचेत करती आपकी बातों का मखौल तक बनने लगा है।

वे लगातार जीतते जा रहे हैं और मनुष्यता लगातार हारती जा रही है। याद रखिये, मुनाफा की संस्कृति में ढलता तंत्र मनुष्य विरोधी ही नहीं, मनुष्य हंता है। इस संस्कृति और इसके अग्रदूतों से हम तो हार रहे हैं लेकिन हमारी संततियों को इनसे जूझना ही होगा। वरना, वे गुलाम के रूप में जन्म लेकर गुलाम ही मरेंगी।

**- हेमंत कुमार झा**